छठ पूजा विधि, महत्व एवं शुभ मुहूर्त

छठ पूजा 2025

छठ पूजा का त्यौहार चार दिनों तक मनाया जाता है| इन चार दिनों में त्यौहार की अलग – अलग प्रथा को पूर्ण किया जाता है| छठ पूजा पर सूर्य देव और उनकी पत्नी उषा की उपासना की जाती है| वैसे तो यह त्यौहार बिहारवासियों के लिए बहुत ही महत्व रखता है लेकिन इसके साथ साथ इसे उत्तर प्रदेश, झारखंड तथा नेपाल के भी कई हिस्सों में भी मनाया जाता है|

इस चार दिनों तक चलने वाले इस महापर्व में महिलाएँ 36 घंटों तक उपवास रखती है| तथा अपने पति व पुत्र की लम्बी आयु के लिए कामना करती है| प्रत्येक वर्ष यह त्यौहार अलग – अलग तिथि को मनाया जाता है|

इस वर्ष छठ पूजा 2025 का यह पावन त्यौहार 25 अक्टूबर 2025, से प्रारम्भ होकर 28 अक्टूबर 2025, तक मनाया जाएगा।

मंदिर दर्शन
आध्यात्मिक अनुभव

पूजन विधि (Puja Vidhi)

छठ पूजा का व्रत चार दिनों का होता है और इसमें विशेष विधि-विधान से पूजा की जाती है:

पहला दिन (नहाय-खाय):
छठ पूजा दिवस 1 – 25 अक्टूबर 2025: नहाय खाय (सूर्योदय सुबह 06:30 बजे, सूर्यास्त शाम 05:40 बजे)।
छठ पूजा की शुरुआत कार्तिक मास के शुक्ल पक्ष की चतुर्थी तिथि से होती है। इस दिन व्रत रखने वाले लोग गंगा या किसी पवित्र नदी में स्नान करके शुद्धि करते हैं और घर में शुद्ध शाकाहारी भोजन ग्रहण करते हैं। इस दिन भोजन में कद्दू की सब्जी और चना दाल प्रमुख होती है।

दूसरा दिन (लोहंडा या खरना):
छठ पूजा दिन 2 – 26 अक्टूबर 2025: लोहंडा और खरना (सूर्योदय सुबह 06:30 बजे, सूर्यास्त शाम 05:45 बजे)

पंचमी तिथि के दिन पूरे दिन का व्रत रखा जाता है और शाम के समय चावल, गुड़ की खीर और रोटी का प्रसाद बनाकर छठी मइया को भोग अर्पित किया जाता है। इस दिन व्रत रखने वाले व्यक्ति केवल यह प्रसाद ग्रहण करते हैं और इसके बाद निराहार व्रत रखते हैं।

तीसरा दिन (संध्या अर्घ्य):
छठ पूजा दिन 3 – 27 अक्टूबर 2025: छठ पूजा, संध्या अर्घ्य (संध्या अर्घ्य का समय शाम 5:10 बजे से 5:48 बजे के बीच रहेगा (स्थान के अनुसार समय में अंतर हो सकता है)

षष्ठी तिथि को व्रतधारी दिनभर बिना अन्न और जल के व्रत रखते हैं। शाम के समय वे नदी, तालाब या किसी जलाशय के किनारे इकट्ठा होते हैं और डूबते सूर्य को जल में खड़े होकर अर्घ्य देते हैं। बांस की टोकरी में फल, ठेकुआ और अन्य प्रसाद रखकर सूर्य देव को अर्पित किया जाता है। महिलाएँ इस दिन नए वस्त्र धारण कर chhath vrat ki katha का श्रवणपान करती है।

मंदिर दर्शन
आध्यात्मिक अनुभव

चौथा दिन (उषा अर्घ्य):
छठ पूजा दिन 4 – 28 अक्टूबर 2025; उषा अर्घ्य, पारण दिवस (सूर्योदय प्रातः 06:00 - 6:30 बजे, सूर्यास्त सायं 06:15 बजे।

सप्तमी तिथि की सुबह उगते हुए सूर्य को अर्घ्य दिया जाता है। व्रतधारी पुनः जलाशय के किनारे जाते हैं और सूर्य भगवान को जल चढ़ाते हैं। इसके बाद व्रत का पारण किया जाता है और घर लौटकर प्रसाद ग्रहण किया जाता है। इसके साथ ही छठ पूजा संपन्न होती है।

छठ पूजा का मंत्र

इस दिन भगवान सूर्यदेव को जल चढ़ाते समय निम्न मंत्रो का जप करने से सूर्य देवता का आशीर्वाद मिलता है –

- ॐ हिरण्यगर्भाय नम:
- ॐ मरीचये नम:
- ॐ आदित्याय नम:
- ॐ सवित्रे नम:
- ॐ अर्काय नम:
- ॐ भास्कराय नम:
- ॐ श्री सवितृ सूर्यनारायणाय नम:
- ॐ मित्राय नम:
- ॐ रवये नम:
- ॐ सूर्याय नम:
- ॐ भानवे नम:
- ॐ खगाय नम:
- ॐ घृणि सूर्याय नम:
- ॐ पूष्णे नम:

छठ पूजा प्रसाद

छठ पूजा में कई तरह के प्रसाद चढ़ाए जाते हैं, जिनमें से कुछ खास ये रहे:

- ठेकुआ: छठ पूजा का सबसे मुख्य प्रसाद ठेकुआ होता है. यह गेहूं के आटे, गुड़, और सूजी से बना होता है.
- गन्ना: छठी मां को गन्ना बहुत पसंद होता है. गन्ने में कैल्शियम, पोटैशियम, आयरन, और मैग्नीशियम जैसे तत्व पाए जाते हैं.
- केला: छठी मां को केला बहुत पसंद है.
- नारियल
- सिंघाड़ा
- सुपारी
- डाभ नींबू

मंदिर दर्शन
आध्यात्मिक अनुभव

पूजा समापन